PD HEARTH SESSION बाल मुस्कान सत्र

Banwasi Vikas Ashram, Bagodar, Giridih

05/01/2017 to	CWS CORE PROJECT	19/01/2017	bva_grd@rediffmail.com

कुपोषण उपचार के लिये समुदाय आधारित पहल

चतुर्थ सत्र

पृष्ठभूमि

झारखण्ड क्षेत्र मे कुपोषण की समस्या दिनो दिन बढता जा रहा है,झारखण्ड प्रदेश अंतर्गत गिरिडीह जिला जो एक अत्यंत पिछडा जिला है, में बच्चों तथा माताओं में कुपोषण आमतौर पर देखा जा सकता है लगभाग 70 से 80 प्रतिशत बच्चे एनिमिया से प्रभावित है। बच्चों का पूर्ण टिकाकारण नही हो पाता है, टिकाकारण हेतू स्वास्थ विभाग द्वारा जारी टिकाकारण कार्ड सभी माताओं के पास उपलब्ध नही होते हैं। कुछ ऐसे भी उदाहरण है जहां माताओं को टिकाकारण कार्ड मिला परन्तु माताऐं सहेज कर रख नही पाई और दोबारे उनको कार्ड नही दिया गया।

सरकार द्वारा विभागीय स्तर पर कुपोषण उपचार के लिये कई प्रयास किये जा रहे है। परन्तु कार्यक्रमो के सही अनुश्रवण एवं जनभागीदारी के अभाव में कार्यक्रमों के उद्देश्यों का फलाफल नही निकाल पाता। CWS के Core project अंतर्गत वनवासी विकास आश्रम समुदाय आधरित कुपोषण उपचार के लिये समुदाय आधारित पहल प्रारंभ किया हैं।

कुपोषण की समस्या और समाधान के लिए समुदाय आधारित साझा पहल के इस सत्र में माताये आपस में मिलकर समस्या के कारणों पर आपसी समझ बढ़ाती ओर मिल जुलकर समाधान हेतु पहल करती है.

PD सत्र द्वारा स्थानीय समुदाय खास कर माताओं में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध खाध पदार्थो के सेवन से संबंधित जागरूता को बढावा देना है। इसके अंतर्गत 15 दिनों तक बाल मुस्कान स़त्र में माताएं अपने बच्चो के साथ भाग लेती है तथा अपने कुपोषित बच्चों को कुपोषण से मुक्ति के लिये स्वयं से तैयार कर खाध पदार्थो का पोषण कराती है। इस सत्र में 06 से 59 माह के कुपोषित बच्चे और उनकी माताऐं भाग लेती हैं। बाल मुस्कान सत्र का तीसरा सत्र 5.01.2017 से 19.01.2017 तक बगोदर प्रखण्ड अंतर्गत अडवारा पंचायत के ग्राम जमुनिया गांव के आंगनबाड़ी केंद्र में सम्पन्न बहुत हुआ।

कुपोषित बच्चो के पहचान हेतू उन्ही गांव का चयन किया गया जहां प्रथम दृष्टया कुपोषण की समस्या अधिक थी। कुपोषण की स्थिति के अकलान हेतू बच्चो के आयु के अनुसार वजन एवं लम्बाई की जांच की जाती हैं। फिर माताओं के साथ बैठक कर कुपोषण की गंभीरता पर चर्चा की जाती है। प्रथम स़त्र में 67 बच्चो के कुपोषण स्थिति की जांच की गई जिसमें अति कुपोषित (लाल) 12 तथा मध्यम कुपोषित (पीला) 26 बच्चे पाये गये। प्रतिशत में देखे तो 17प्रतिशत और 38 प्रतिशत बच्चे कुपोषित पाये गये।

दूसरे सत्र में 48 बच्चो की स्थिति की जांच किया गया जिसमें अति कुपोषित 10% तथा मध्यम कुपोषित 70% बच्चे कुपोषित पाये गये। प्रथम सत्र में PD Hearth Session में 23 बच्चों का कुपोषण का उपचार किया गया तथा दूसरे सत्र में 24 बच्चो के लिये समुदाय स्तर पर उपचार किया गया।

तीसरा सत्र में 47 बच्चो की स्थिति की जांच किया गया जिसमें अति कुपोषित 14 तथा मध्यम कुपोषित 19 बच्चे कुपोषित पाये गये। प्रथम सत्र में PD Hearth Session में 23 बच्चों का कुपोषण का उपचार किया गया तथा दूसरे सत्र में 24 बच्चो के लिये समुदाय स्तर पर उपचार किया गया तथा तीसरा सत्र में 24 बच्चो के लिये समुदाय स्तर पर उपचार किया गया।

चौथे सत्र के लिए 60 बच्चो का बेस लाइन अध्ययन किया गया था, जिसमे पाया गया कि 22 बच्चे मध्यम कुपोषित, 8 बचे अति कुपोषित पाये गए. अति कुपोषित बच्चों के लिए माताओं को विशेष रूप से अपने बच्चों पा ध्यान देने हेतु अनुरोध किया गाया. यह भी कोशिश किया गया की इन बच्चो के बेहत्तर इलाज के लिए गिरिडीह जाना चाहिये. चूँकि इस सत्र में सेविका भी साथ थी अतः उन्हें भी माताओं को प्रेरित करने को कहा गया. सत्र प्रारंभ के प्रथम दिन सभी 60 बच्चों के माताओं की उपस्थिति हुई. माताओ के सामने उनके बच्चों की कुपोषण की स्थिति का आकलन किया गया.

अति कुपोषित ओर मध्यम कुपोषित बच्चो एवं माताओं के साथ सत्र प्रारंभ हुआ. .

उद्देश्यः–

PD Hearth Session मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं –

- कुपोषित बच्चों को सामान्य स्थिति में वापास लाना
- कुपोषित बच्चो के सामान्य स्वस्थ में लाई गई स्थिति को नियंत्रण बनाये रखाना।
- समुदाय में कुपोषण की स्थिति को बढाने से रोकना।
- माताओं को बच्चों के खान–पान एवं रख रखाव के प्रति जागरूक करना।

बाल मुस्कान सत्र पीडी हर्थ के लिए लक्षित समूह

6 माह से 59 माह तक के मध्याम कुपोषित एवं अतिकुपोषित बच्चे तथा उनकी माताएं या अभिभावक

15 दिवसीय पीडी हर्थ शिविर

उद्घाटन के पश्चात सभी बच्चो का कुपोषण के स्तर का बेसलाइन डाटा तैयार करने हेतू वजन लिया गया ।

चर्चा के मुख्य बिन्दू

माताओं के साथ पीडी हर्थ का उदेद्श्य, 15 दिनो तक चलने वाले गतिविधियां पर विस्तृत चर्चा।

बेसलाइन आकडे का प्रस्तुतिकरण समुदाय में कुपोषण की स्थिति और उसके उपचार पर चर्चा।

भोजन एवं बेबीफूड

प्रारंभ में बच्चो को बेसन की लड्डू और 1 घंटे के बाद दूध से बनी खीर दिया गया।

भोजन बनाने के काम में उन महिलाओ को चिन्हीत किया गया जिन्होने स्वयं से इस कार्य की जिम्मेवारी लिया।

भोजन पकाने में साफ सफाई पर विशेष सवधानी बरती गई।

चार्ट पेपर में सभी बच्चो के आकृति का प्रतिक(चित्र) लगया गया और उन प्रतिको का नाम बच्चो के नाम पर रखा गया यानि एक प्रतिक(चित्र) और उसके नीचे उस बच्चे का नाम, उम्र, माता का नाम, पिता का नाम, वजन लिखा गया।

प्रतिक(चित्र) को 15 भागो में बांटा गया। माताओं को यह संदेश दिया गया कि हर दिन आपका उपस्थिति जरूरी है हर दिन आप अपने बच्चे के चित्र के एक भाग में रंग भरेगे। एक भी दिन आप अगर अनुपस्थित रहेगे तो आपके बच्चे का चित्र अधूरा रहेगा और कुपोषण का सही उपचार नही हो पायेगा। इसलिए नियमित आना बहुत जरूरी है। नियमित देखभाल से ही बच्चो का विकास होता हैं।

उपलब्धियां

कुपोषण की स्थिति में सकारात्मक बदलाव

15 दिनो के सत्र में बच्चों को हर वो जरूरी खाद पदार्थ दिए गये जिससे बच्चो के कुपोषण की स्थिति में स्वभाविक रूप से परिवर्तन आया।

सत्र के दौरान दिनांक 05.03.2017, 10.03.2017, 15.03.2017 और 19.03.2017 को बच्चों में हुऐ परिवर्तन को मोनिटर किया गया।

पीडी हर्थ सत्र में माताओं को आपस में खुलकर बातचीत करने का अवसर मिला जहां बच्चों के पोषण एवं देखभाल से संबंधित अच्छी आदतों को अपनाने की समझ बढी

सत्र के दौरान माताऐं प्रोटीन, वसा, कार्बोहइडेड युक्त पोष्टिक और स्वादिष्ट व्यंजन को आपस में मिलकर बनाना सिखी।

पोषहार बनानें के दौरान स्वच्छता के लिए आवश्यक बातों से भी परिचत हुई।

न्यूट्रिमिक्स/बेबीफूड बनाने के तरीको से भी परिचित कराया गया तथा उसे व्यवहार में लाने हेतू प्रोत्साहित किया गया।

सत्र में पोषहार बनाने में कम से कम बहारी साम्रगी का इस्तेमाल हो सके इसके लिए महिलाओ को घर से उत्पादित सामाग्रियों को लाने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जिसके अच्छे परिणाम निकलें।

Suresh kumar shakrt
Secretary
Banwasi Vikas Ashram
Bagodar, Giridih, Jharkhand
bva_grd@rediffmail.com